1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

परोऽपेहि मनस्पाप। अथर्ववेद-6/45/1
ओ मेरे मन के पाप! तू मुझसे दूर भाग जा।
O the sin in my mind! Leave me and go far away.

वर्ष 38, अंक 15 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 फरवरी, 2015 से रविवार 1 मार्च, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से

विश्व पुस्तक मेला 2015 प्रगति मैदान में वैदिक साहित्य प्रचार प्रसार यज्ञ सम्पन्न

पुस्तक मेले में सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों की सूची में शामिल सत्यार्थ प्रकाश

विश्व पुस्तक मेला 2015 प्रगति मैदान, नई दिल्ली 14 फरवरी से 22 फरवरी तक संपन्न हुआ। हर वर्ष की भांति दिल्ली सभा द्वारा मेले में व्यापक स्तर पर भाग लिया गया। पुस्तक मेले लगाने के पीछे क्या उद्देश्य है? उससे सामान्य जन को परिचित करवाना अत्यंत आवश्यक है।

1. **वैदिक सिद्धांतों का प्रचारक–** सभी इस वैदिक सिद्धांत से परिचित हैं कि ज्ञान स्वतः किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकता अपितु उसे स्वाध्याय अथवा विद्वान् के सत्संग द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे में विशेष रूप से आज के परिवेश में ज्ञानार्जन करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम साहित्य का वृहद स्तर पर प्रचार– प्रसार है। यह अटल सिद्धांत है कि संसार में केवल वैदिक साहित्य ही ईश्वरप्रदत्त वेद ज्ञान पर आधारित होने के कारण मानव जीवन की समस्त समस्याओं के समाधान से लेकर मानव जीवन के उद्देश्य को बतलाने में सक्षम है। मानवता के कल्याण के लिए एवं ऋषि दयानंद की आज्ञा कि वेदों का पढ़ना– पढ़ाना एवं सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है को चरितार्थ करने हेतु पुस्तक मेले में आर्यसमाज का प्रचार एक सार्थक प्रयास है।

2. **आर्य लेखकों एवं प्रकाशकों को सहयोग–** आर्यसमाज की स्थापना से लेकर कुछ दशक पहले तक आर्यसमाज में स्वाध्याय की परम्परा विद्यमान थी। कुछ काल से यह परम्परा कुछ क्षीण सी होती दिख .....शेष पेज 4 पर

सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर केंद्रीय मंत्री श्री वीके सिंह ने पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साह वर्धन किया। इस अवसर पर स्टाल पर सेवा देते श्री सुरेंद्र आर्य व अशोक गुप्ता सपत्नीक अरुण प्रकाश वर्मा, श्रीमती विभा आर्या, श्री सुखबीर सिंह आर्य एवं अन्य।

191वें महर्षि दयानंद जन्मोत्सव के अवसर पर भव्य भजन संध्या सम्पन्न

जन्मोत्सव के अवसर पर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं एमडीएच परिवार की ओर से अनेक समाचार पत्रों– पंजाब केसरी, दैनिक जागरण, अमर उजाला, सहारा आदि में प्रकाशित कराए गए शुभकामना विज्ञापन।

महर्षि दयानंद सरस्वती के 191वें जन्मदिवस के अवसर पर दिल्ली में हुए अनेक कार्यक्रम

100 से अधिक स्थानों पर हुए यज्ञ, प्रवचन, साहित्य वितरण, प्रसाद वितरण एवं ऋषि लंगर के कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में वेद प्रचार मण्डल और आर्य समाज कीर्ति नगर के सहयोग से महर्षि दयानन्द सरस्वती के 191 वें जन्मदिवस को हर्षोल्लास पूर्वक आर्य समाज कीर्ति नगर में मनाया गया। सायं कालीन .....शेष पेज 4 पर

सुमधुर भजनों के द्वारा अपनी भावांजलि देते भजनोपदेशक श्री देव आर्य, श्री अविरल माथुर एवं श्रीमती सुकृति माथुर।

वेद स्वाध्याय

हम अबोध बालकों की सदा रक्षा करें

ऋषि–मधुच्छन्दाः।। **देवता** – अग्निः।। **छन्दः**–गायत्री।।

शब्दार्थ– अग्ने= हे प्रभो! अग्ने! सः = वह तुम पिता सूनवे इव = पिता की भांति मुझ पुत्र के लिए सु उपायनः = सुगमता से पहुंचने योग्य भव = होओ और स्वस्तये= कल्याण के लिए नः = हमें सचस्व = सेवित करो।

विनय– संसार में जिनके द्वारा हमारा जन्म होता है उन्हें हम पिता कहते हैं और भी जो वृद्ध पुरुष, गुरू आदि होते हैं, वे भी हमारा उत्कृष्ट पालन करने वाले होने से पिता कहलाते हैं, परंतु हे अग्ने! हम सभी को कभी न कभी अनुभव हो जाता है कि हमारे असली पालक पिता तो एकमात्र तुम्हीं हो। एक समय आता है जब

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सस्चवा नः स्वस्तये।। ...ऋ॰ 1.1.9

सांसारिक पिता भी वैसे ही रोते खड़े रह जाते हैं और हमारी पालना, रक्षा नहीं कर सकते। सचमुच संसार के वासी हम सब–सांसारिक पिता व पुत्र सब के सब तेरे एक समान पुत्र हैं। हे हम सबके पितः! हे परमपितः ! जब हम सब तेरे पुत्र हैं तब हमारी आप तक सदा पहुंच क्यों नहीं होती? पुत्र का तो यह अधिकार है कि वह जब चाहे पिता के पास पहुंच सके। जब इस संसार में और कोई हमारी रक्षा कर सकने वाला है ही नहीं, हमारा दुखड़ा सुन सकने वाला है ही नहीं, तो हे पितः हम और कहाँ जाएं? तू तो हमारे लिए 'सु उपायन' रह, सुगमता से पहुंच सकने वाला हो। हे एकमात्र पितः! हम जिस समय चाहें, जिस स्थान पर चाहें तुझे मिल सकें–अपना दुःख सुना सकें– अपनी बाल–कामनाएं पूरी करा सकें। हम बच्चों की तुमसे यही प्रार्थना है, यही याचना है। हमारा कल्याण किस में है यह भी हम अबोध बालक क्या जाने? जो हमें अकल्याण दिखाई देता है पीछे पता लगता है कि वही हमारा कल्याण था। हे पितः! तुम्ही जानते हो कि हम बच्चों का कल्याण किसमें है। बस तुम्हीं हमारी स्वस्ति के लिए, कल्याण के लिए हमें–अपने बच्चों को सेवित करो, पालो–पोसो। हम तुम्हारे बच्चे हैं! हम तुम्हारे बच्चे हैं।

आचार्य अभयदेव
साभार वैदिक विनय

प्रगति मैदान, दिल्ली में चल रहे विश्व पुस्तक मेले से सम्बंधित मेरे व्यक्तिगत अनुभव

1. पुस्तक मेले में आर्य समाज से सम्बंधित साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। आर्य प्रति. निधि सभा, दिल्ली का विशाल स्टाल आर्य समाज प्रमुख रूप से अंकित आकर्षक टी–शर्ट्स और ओ३म व गायत्री से विभूषित भगवी टोपिओ से सुसज्जित समर्पित कार्यकर्त्ताओं के साथ भारी भीड़ का आकर्षण केंद्र बना हुआ है । आर्य समाज से सम्बंधित सभी साहित्य यहाँ उपलब्ध है । पर्याप्त संख्या में उपस्थित कार्यकर्त्ता जो अपने उक्त वेश में सेवा कार्य में लगे हुए हैं, उत्साह के साथ साहित्य प्रसार का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

2. उक्त स्टाल से ही सभा द्वारा सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जा रहा है, जो अपने आप में एक आकर्षण है।

3. पिछले कई दिनों से विभिन्न कार्यकर्त्ता सेवा भाव से उक्त स्टाल के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश की सैकड़ों प्रतियाँ निजी स्तर पर विक्रय कर आर्य समाज की विचारधारा को गैर आर्य समाजी घरों में पहुंचा रहे हैं ।

ऐसे कार्यकर्त्ताओं से ही प्रेरणा प्राप्त कर मैं स्वयं मात्र इसी उद्देश्य से ही पुस्तक मेले में गया और मुख्य गेट के पास इधर उधर घूम घूम कर सत्यार्थ प्रकाश की 500 प्रतियों को बेचने के अपने निजी लक्ष्य को मैं 3 घंटों में पा सका । यह मेरे लिए हर्ष और संतोष का विषय था।

4. इसमें अधिक महत्त्वपूर्ण तो यह था कि अधिकाँश सत्यार्थ प्रकाश गैर आर्य समाजी घरों में गए । कुछेक तो (लगभग 10) सत्यार्थ प्रकाश मैं मुस्लिम लोगों को बेचने में सफल रहा। सेवा भाव से 500 सत्यार्थ प्रकाश की बिक्री से मुझे जो आत्म संतोष मिला वह अवर्णनीय है।

5. ऋषि दयानंद की उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी, वैदिक साहित्य एवं आर्यसमाज की अनेक संस्थाएं आर्य एवं वैदिक साहित्य उपलब्ध करा रही थी और इस दृष्टि से उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा गर्व का विषय रही।

6. संभवतः आर्य समाज के साहित्य की मांग को देखते हुए गैर आर्यसमाजी स्टालों पर भी वैदिक साहित्य व आर्य साहित्य प्रदर्शित था । स्वाभाविक है कि उनके माध्यम से भी सद्साहित्य प्रसार का कार्य हो रहा है । यह मेरे लिए गर्व का विषय था।

7. वैदिक और आर्ष साहित्य इलेक्ट्रोनिक रूप अर्थात् सी. डी. आदि के रूप में भी उपलब्ध था और तुलनात्मक दृष्टि से सस्ते मूल्य पर संभवतः प्रचार की भावना से उपलब्ध कराया जा रहा है । उदाहरण के तौर पर घर में चारों वेद होने पर भी मैं चारों वेदों की ऑडियो सी. डी. के सेट, जो वहां मात्र 500 रुपये में उपलब्ध था, के 2 सेट खरीदने को बाध्य हो गया ।

8. परोपकारिणी सभा के स्टाल से तो प्रचार की भावना से सत्यार्थ प्रकाश सहित 4 पुस्तकें गैर आर्य समाजियों को निशुल्क वितरित हो रही हैं।

9. पिछले दिनों एक मिथ्या समाचार परिचालित हुआ कि गीता प्रेस गोरखपुर आर्थिक कारणों से बंद हो गई है । इस मेले में गीता प्रेस के भव्य एवं विस्तारित स्टाल में इस मिथ्या समाचार के खंडन में एक बोर्ड पर यह प्रदर्शित था कि गीता प्रेस सुचारू रूप से चल रही है और उसके बंद होने के समाचार भ्रामक एवं शरारती तत्त्वों द्वारा प्रचारित थे ।

10. दुखद अनुभव यह था कि छोटे छोटे विभिन्न गुरुडम वादी सम्प्रदाय अपने साहित्य के साथ वहां तो थे परन्तु इस्लाम के प्रचार को ले कर कुकरमुत्ते की तरह यत्र तत्र अपेक्षा से कहीं अधिक स्टाल हैं। उनके अनेक कार्यकर्त्ता तो बाहर सड़कों पर कुरआन वा अन्यान्य इस्लामिक साहित्य निःशुल्क वितरित कर रहे हैं। यह हमारे लिए जहां बड़ी चुनौती है वहां उनकी आक्रामक शैली में सत्य सनातन वैदिक धर्म को निःस्वार्थ भाव से उत्सर्ग की भावना के साथ प्रसारित करने के संकल्प का बोध भी कराता है।

–विनय आर्य, महामंत्री

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

1. डा॰ श्री अशोक कुमार चौहान	20000/–
2. दक्षिणी दिल्ली वेदप्रचार मंडल	4000/–
3. श्रीमति अंजलि कपूर	10000/–
4. श्री वेद प्रकाश मल्होत्रा	400/–
5. आर्य समाज कृष्णा नगर	2000/–
6. आर्य समाज सुंदर विहार	2000/–
7. श्री जगदीश सिंह वर्मा, सुंदर विहार	1000/–
8. श्री वेद प्रकाश सिंघल, रोहिणी	500/–
9. आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट 1	10000/–
10. कुमारी उर्मिला राजीत्या, नया बाडा, पुलिस लाईन अजमेर	5000/–
11. आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली	20000/–

सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण के लिए कम मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए दान देने वाले समस्त महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं का हार्दिक धन्यवाद। आप सबके सहयोग एवं आशीर्वाद से ही हम इस कार्य को करने में सफल हो सके हैं।

–विनय आर्य, महामंत्री

होलिका वैदिक स्वरूप

होलिका दहन क्यों? आओ जानें

संसार के समरांगन में जूझ रहे मनुष्यों को अर्थात् संसार रूपी दुःख सागर में जूझते हुए मानवों को नवीन स्फूर्ति व नूतन उल्लास प्रदान करने के हर वर्ष पर्व अर्थात् त्यौहार आते हैं तथा हमारे अन्दर आलस्य या कोई कमजोरी हो तो उसे दूर हटाया करते हैं। भारत पर्वों का देश है। विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा भारत में मनाए जाने वाले पर्वों की संख्या अधिक है। सर्वप्रथम तो पर्व शब्द का अर्थ ही आप पाठकगण समझ लीजिए– ''पूरयति जनान् आनन्देन इति पर्वः'' अर्थात् जो लोगों में आनन्द को भर दे, खुशियों को भर दे वही पर्व है। भारतीय मनीषी व दर्शन शास्त्र मनुष्य के जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं। विष्णु शर्मा की विश्व विख्यात नीति–कथा पुस्तक 'पंचतन्त्र' में एक जगह श्लोक आता है – अयं निजः परोवेति गणना लघुचेत्तसाम्। उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। यह मेरा है, यह पराया है, इस प्रकार का चिन्तन संकुचित व्यक्तियों का ही हो सकता है। भारतीय पर्वो में सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे प्रकृति व ऋतुओं पर आधारित हैं, ऋतुआ. ं के परिवर्तन के साथ–साथ पर्व आते रहते हैं जिनमें होली भी प्रसिद्ध है इसे नवसस्येष्टि पर्व भी कहा जाता है। होली के विषय में प्रचलित भ्रांतिपूर्ण कथा पुराणों के आधार पर हिरण्यकश्यपु एवं प्रहलाद की कथा सर्व विदित है। जो नितान्त मिथ्या है। मनघड़ंत है। आईये मनघड़ंत कहानी को छोड़कर सत्य की खोज करें। किसी भी अनाज के ऊपर की पर्त को होलिका कहते है। जैसे चना, मटर, गेहूँ, जौ की गिद्दी की उपर वाली पर्त। इसी प्रकार चना, गेहूँ, मटर, जौ की गिद्दी (गिरी) को प्रहलाद कहते हैं। होलिका को माता इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह चना इत्यादि का निर्माण व रक्षा करती है। 'माता निर्माता भवति' यदि यह पर्त अर्थात् होलिका न हो तो चना मटर रूपी प्रहलाद का जन्म नहीं हो सकता और भी जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को किसी भी आपत्ति से बचा लेती है और यदि अग्नि में जलना भी पड़े तो बच्चे को बचाकर स्वयं को आहुत करने के लिए तत्पर हो जाती है। इसी प्रकार चना, मटर, जौ व गेहूँ जब अग्नि में भुनते हैं तो वह होलिका अर्थात् गेहुँ व जौ इत्यादि का ऊपरी खोल पहले जलता है और अंदर की गिरी सुरक्षित रहती है अर्थात् प्रहलाद बच जाता है। उस समय प्रसन्नता से उस माता की जयघोष की जाती है। अतः प्रहलाद रूपी गिरी को बचाकर अपने को आहुत करने के कारण हो. लिका को माता कहा जाता है।

होली की पुरातन परम्परा एवं आधुनिक विकृत स्वरूप : प्राचीन काल में ऋषि लोग इस पावन पर्व पर विशाल यज्ञों का आयोजन किया करते थे। इन विशाल यज्ञों में सर्वजन कल्याणार्थ आहुतियाँ अर्पित की जाती थीं। यही विशाल यज्ञ धीरे–धीरे सारे गाँवों और नगरों के सामूहिक यज्ञ बन गये। पुनश्चः इन सामूहिक यज्ञों ने पुराणकाल के भारतीय पतनकाल में होलिका दहन का स्वरूप लिया। इस काल में भी यह बात अच्छी रहीं कि सारा गांव एक ही होलिका का दहन करता था और कोई ब्राह्मण कुछ न कुछ मंत्रों का उच्चारण कर वातावरण को अच्छा बनाने का प्रयत्न करता था। इसके पश्चात् यह प्रक्रिया भी क्षीण से क्षीणतर होती चली गयी। आजकल तो गांवों में सारे गांव की एक होली नहीं जलती, अपितु मुहल्ले–मुहल्ले की अलग–अलग होली जलती है। यह प्रवृति हमारी विखंडित सोच की सूचक है। कृति में विखंडन, वृत्ति के विखण्डन का परिणाम है।

होली तो समाजवाद की दिशा में हमारे ऋषि पूर्वजों द्वारा उठाया गया एक सराहनीय पग था। आज यह पर्व समाजवाद के स्थान पर विघटन के बीज बो रहा है। व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष की घृणित वृत्ति को इस पर्व पर अग्नि को समर्पित कर हृदय की शुद्धता और पवित्रता पर ध्यान केन्द्रित करता था जिसने आज का विकृत और घिनौना स्वरूप ले लिया। इस प्राचीन परंपरा के स्थान पर आजकल व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष के सर्प को पूरे वर्ष दूध पिलाता है और होली आने तक उसे पूर्ण रूपेण पाल–पोसकर नवयुवक बना डालता है। यौवन की मदोन्मत्तता उसे किसी से गले मिलने को नहीं अपितु किसी का गला काटने के लिए प्रेरित करती है। अतः आज के दूषित परिवेश में इस पर्व की पावनता को मानव की प्रतिशोध की भावना ने इसे हर प्रकार विषैला बना डाला है। यह पर्व हमें तोड़ने की नहीं जोड़ने की शिक्षा देता है। इसलिए हे मानव! गला काटने का घिनौना खेल छोड़, इस पर्व के माध्यम से सामाजिक समरसता की स्थापना में सहायक बन। इसी से तेरे जीवन का कल्याण होगा।

होली का वास्तविक स्वरूप एवं वैज्ञानिक रहस्य : इस पर्व का प्रा. चीनतम नाम वासन्ती नव सस्येष्टि है वासन्ती = वसन्त ऋतु में, नव = नये, सस्य = अनाज, येष्टि = यज्ञ। अर्थात् बसन्त ऋतु के नये अनाजों से किया हुआ यज्ञ। परन्तु होली शब्द होलक का अपभ्रंश है अर्थात् बिगड़ा हुआ स्वरूप है। उदाहरण स्वरूप एतिहासिक ग्रंथ रामायण के कुछ विशेष तथ्य जिनम. ं मिलावट की गई है यहाँ बताता हूँ :– ''सीता जी की माता का नाम 'सुनैना धरणी' था।'' मगर कुछ धूर्त पेटार्थी ब्राह्मणों के द्वारा धरणी की जगह 'धरती' करके...**शेष पेज 6,8 पर**

वैदिक मान्यताओं के अनुसार होली को वासंती नवसस्योष्टि पर्व के रूप में वसन्त ऋतु के फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है, जिससे कि घरों में नया अन्न आता है। चारों ओर सुगन्धि एवं खुशियों का वातावरण होता है। परन्तु कालान्तर में इस पर्व में रूढ़िवादिता का प्रवेश हुआ और इसके आयोजनों में भारी बदलाव आया जो मानवता के लिए घातक बन रहा है। जैसे–गन्दे रंगों से मनाने की गलत परम्परा, भद्दे गीतों को गाकर मनाने का प्रचलन, भांग आदि नशे के पदार्थों को होली का प्रिय खाद्य माना जाता है तथा हल्के किस्म के हास्य को लेकर नाटिकाओं का मंचन आदि कुप्रथाएँ प्रचलित हो गई हैं। सभी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि इन प्रचलित कुप्रथाओं को छोड़ आर्य वैदिक परम्पराओं का निर्वहन करें जिससे आर्य परिवारों का जीवन सुखद हो। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 'होली मंगल मिलन' 2015 समारोह रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में 5 मार्च 2015 को आयोजित किया जाएगा। आप सब सपरिवार एवं इष्ट मित्रों व पड़ोसियों सहित पधारे और कुछ सन्देश लेकर अवश्य जाएं। कार्यक्रम का टी.वी. चैनल पर सीधा प्रसारण एम.डी.एच. के सहयोग से किया जाएगा। दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में होली के मधुर गीतों की सी.डी. उपलब्ध है। वहाँ से क्रय कर होली के गीतों का रसास्वादन कर सकते हैं।

...सम्पादक

आर्य समाज के गीतों एवं होली गीत – 'हो ली सो होली' को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून

Songs Name	Vodafone	Idea	Airtel	Videocon	Tata	Reliance	MTNL	BSNL(South, East)	BSNL(North, West)	Aircel	Uninor(GUJRAT, MAHARASTRA, Goa)	Uninor(UP, Bihar, Jharkhand)	MTS
Aai Fauj Dayaanand Wali	5021678	5021678	4686559	341553	5021678	6312073	5021678	5021678	804056	804056	0387407	5021678	10545238
Hey Prabhu Hum Tumse	5021679	5021679	4686560	350028	5021679	6312074	5021679	5021679	804057	804057	0387408	5021679	10545239
Hota Hai Saare Desh Ka	5021680	5021680	4686561	341554	5021680	6312075	5021680	5021680	804058	804058	0387409	5021680	10545240
Humko Sab Duniya Jaane	5021681	5021681	4686562	341555	5021681	6312076	5021681	5021681	804060	804060	0387410	5021681	10545241
Jo Holi So Holi	5021682	5021682	4684460	341556	5021682	6312077	5021682	5021682	804060	804060	0387411	5021682	10545242
Pujniya Prabhu Humaare	5021683	5021683	4684461	341557	5021683	6312078	5021683	5021683	804061	804061	0387412	5021683	10545243
Suno Suno Ae Duniya Waalo	5021684	5021684	4684462	341558	5021684	6312079	5021684	5021684	804062	804062	0387413	5021684	10545246
Yun To Kitne Hi Mahapurush	5021688	5021688	4684463	341545	5021688	6312080	5021688	5021688	804063	804063	0387414	5021688	10545247
How To Download	SMS CT Code To 56789	DIAL 56789 Code	DIAL 543211Code	SMS CT Code To 543211	SMS CT Code To 543211	SMS CT Code To 51234	SMS PT Code To 56789	SMS BT Code To 56700	SMS BT Code To 56700	SMS DT Code To 53000	DIAL 52222 Code	DIAL 52222 Code	SMS CT Code To 55777

पृष्ठ 1 का शेष

191वें महर्षि ...

वेला में 3:15 बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य जी ने यज्ञ की उपयोगिता पर प्रकाश डाला । देश एवं दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं संस्थाओं में महर्षि के जन्मोत्सव के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और बाजार, मुख्यमार्गों, चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों पर प्रसाद वितरण, साहित्य वितरण एवं ऋषि लंगर के कार्यक्रम आयोजित किया गया। आज सायं कालीन पवित्र वेला में भजन संध्या के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन का परिज्ञान और आनन्द का अनुभव भी हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के युवा भजनीक श्री देव आर्य जी ने अपने साथियों के साथ उत्कृष्ट एवं नव भजन-संगीत के आनन्द में श्रोताओं को सराबोर कर दिया । उनका बाँसुरी पर साथ दे रहे श्री सतीश जी एवं तबले पर संगत करते श्री धनञ्जय जी, श्री देव जी ने संगीत की मनमोहक प्रस्तुति दी जिसमें 'ऋषि गाथा को गाने की आदत सी हो गई। सत्य क्या है? ये बताने की आदत सी हो गई' तथा 'गुरुदेव दयानन्द तुम फिर से आजाओ' आदि भजनों के माध्यम से श्रोताओं को आह्लादित किया। इसके पश्चात् श्रीमती सुकृति आर्या एवं श्री अविरल माथुर ने शास्त्रीय संगीत की शैली में उत्कृष्ट भजन-संगीत का रसास्वादन कराया जिसमें 'स्वामी जी जो तुम कर गए अहसान तुम्हारा' तथा 'कर ले प्रभु से

.....शेष पेज 6 पर

वेद प्रचारार्थ पत्रिका प्रकाशन करने वाले महानुभवों का सम्मान–डा. बी.डी. उक्खल (ब्रह्मार्पण), श्री अजय आर्य (वेद प्रकाश), श्री अरूण आर्य (कमल ज्योति)

दिल्ली की सबसे छोटी आर्य समाज मंगोलपुरी के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का सम्मान, आर्य समाज कीर्तिनगर के सबसे वरिष्ठ सदस्य का सम्मान एवं उपस्थित आर्यों से भरा पंडाल।

विश्व पुस्तक मेला ...

रही है जिसके कारण सामान्य गृहस्थ वैदिक सिद्धांतों से कम ही परिचित हो पा रहे है। आर्यसमाज के उत्सवों पर भी वैदिक साहित्य की अनुपलब्धता एवं साहित्य का श्रोताओं द्वारा न खरीदे जाने से भी साहित्य की बिक्री का दिनों दिन घटना एक अन्य कारण है। साहित्य के प्रति इस बेरुखी से आर्यसमाज के प्रकाशकों का एवं लेखकों दोनों का मायूस होना स्वाभाविक दिख रहा है। ऐसे में पुस्तक मेले संजीवनी के समान प्रकाशकों एवं आर्य लेखकों का मनोबल बढ़ाने में कारगर सिद्ध होते है।

3. युवा पीढ़ी का निर्माण– युवा पीढ़ी पुस्तक मेले में तो दिखती है मगर आर्यसमाज के उत्सवों से लगभग गायब है। ऐसे में पुस्तक मेले का विचार एवं युवा पाठक दोनों के मध्य दूरी कम करने में लाभदायक है। पुस्तक मेले के माध्यम से अनेकों युवाओं का जीवन निर्माण होना अनिवार्य है क्योंकि यह वैदिक विचारधारा की विशेषता और आर्यों के पुरुषार्थ का फल है।

4. मत–मतान्तरों के भ्रामक प्रचार के प्रति जन चेतना– पिछले कुछ वर्षों से यह देखने में आ रहा था कि मत मतान्तर वेद विरुद्ध मान्यताओं का पुस्तक मेले से बढ़ चढ़ कर प्रचार करते थे। झूठ को अगर हजार बार चिल्लाये तो वह सच लगने लगता है। मत मतान्तरों का भ्रामक प्रचार कुछ ऐसा ही होता है। इसे नियंत्रित करने में पुस्तक मेले बहुत कारगर हैं। आप सभी जानते है कि मीडिया एवं फिल्मी संस्कृति किस प्रकार से युवाओं की अपरिपक्व सोच को प्रभावित करती है ऐसे में पुस्तक मेले उन्हें भटकने से बचाते हैं।

5. आर्य संगठन का निर्माण– पुस्तक मेले में सहयोग हेतु विभिन्न राज्यों से अनेक आर्यजन पधारे। वैदिक विद्वान आचार्य सनत कुमार जी अजमेर से, ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी, आचार्य संदीप जी सोनीपत से, श्री संजय जी कुरुक्षेत्र से, श्री जमनादास जी उदगीर, श्री हरिप्रसाद जी हिण्डौन से, बन्नू जी पंतनगर उत्तराखंड से, मुकुल शर्मा जी फरीदकोट पंजाब से, अनुभव आर्य जी प्रयाग से पधारे। इसके अतरिक्त अरुण लवानिया जी, आशीष आर्य जी, दर्शनाचार्य ऋषिदेव जी, गणेश गोयल जी, सुखबीर जी, विजय आर्य जी, रवि जी आदि सज्जन दिल्ली से अपनी सेवा देकर ऋषि कार्य में भागीदार बने।

....शेष पेज 6 पर

विश्व पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का स्टॉल।

वैदिक धर्म से संबंधित शंकाओं का समधान करते आचार्य ऋषिदेव।

विश्व पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य के स्टॉल पर जन समुदाय।

गुरू विरजानंद संस्कृतकुलम् के विद्यार्थी अपने आचार्य धनंजय शास्त्री व सुखबीर सिंह आर्य के साथ।

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार करते आर्य कार्यकर्त्ता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

बोधोत्सव के अवसर पर आर्य जनता को सम्बोधित करते वैदिक विद्वान् आचार्य वागीश, ब्रह्मचारिणी सुमेधा आर्या एवं श्री कीर्ति शर्मा।

पाखंड खंडन सम्मेलन में जादू की माध्यम से समाज में फैले गुरूडमों के प्रति जागरूकता पैदा करते श्री मनोज एवं विद्यालय के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम।

माता रूकमणी देवी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित श्री रवीन्द्र महता, श्री सुरेश ग्रोवर आर्य वैदिक कार्यकर्त्ता पुरस्कार प्राप्त करते श्री विवेक आर्य जी, ब्रह्मचारी सत्यप्रकाश को माता छजिया देवी आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार एवं श्री उमा मोंगा को डा. मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती महिला पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समारोह में उपस्थित आर्यजनों से भरा पंडाल।

17 फरवरी 2015 रामलीला मैदान दिल्ली में मनाया प्रात: 8 बजे यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ जिसमें विभिन्न आर्य विद्यालयों के छात्रों की खेल प्रतियोगिताएं प्रारंभ हुई। साथ ही विभिन्न आयु वर्ग के वयस्कों की दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया इसके साथ ही श्री सुभाष चन्द्र चांदना जी ने सपत्नीक उपस्थित होकर ध्वजारोहण किया। उसके बाद गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं विद्यालयों के छात्र एवं आर्य वीर दल के वीरों ने उपस्थित महानुभावों के साथ ध्वज गान किया। श्री चाँदना जी ने अपने उद्बोधन में विश्व को आर्य बनाने का आह्वान किया। अतिथि महोदय श्री मनोज गुलाटी जी ने आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में आयोजित खेल प्रतियोगिता का शुभारम्भ कराया जो विभिन्न विद्यालयों की सामूहिक प्रतियोगिता विभिन्न आयु वर्ग के छात्रों के द्वारा सम्पन्न हुई। भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय जी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की कन्याओं ने सुन्दर संगीत मय भजन की प्रस्तुति की।

ब्र० सुमेधा जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने मन्दिर में घूमते चूहों से प्रेरणा लेकर देश के सुधार का महान कार्य किया उन्होंने अछूतों के लिए महान कार्य किया। उन्होंने पाखण्ड का खण्डन कर वैदिक धर्म के सत्य ज्ञान का प्रचार प्रसार किया। आर्य समाज जनकपुरी सी 3 ब्लॉक की वीरांगनाओं ने एक भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र रैली जी तथा संयोजक श्री कीर्ति शर्मा रहे। श्री कीर्ति शर्मा जी ने कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की, उन्होंने बताया कि आज के 'ऋषि बोध दिवस' को 'अंधविश्वास निवारण सम्मेलन' हेतु सुन्दर नाटिका का मंचन किया जो आकर्षण केन्द्र रहा। जिसके द्वारा वर्तमान में समाज में आए अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं अनाचार के साम्राज्य की चर्चा की गई है। इसके पश्चात् सुप्रसिद्ध जादूगर मनोज कुमार ने अपने अनेक जादूगरी कारनामें दिखाते हुए जनता को सन्देश दिया कि हमें अन्धविश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह जादू-जादू नहीं सिर्फ एक कला है। हमें इस कला के रहस्य को जानना चाहिए।

डा. आचार्य वागीश(मुम्बई) ने अपने सम्बोधन में कहा कि- आज संसार का वैज्ञानिक सृष्टि के रहस्यों की खोज में लगा है। इटली के महान जाद. ूगर हुदनी की चर्चा करते हुए कहा कि वे कहते थे कि ये छोटे-छोटे क्रियाकलाप मेरे जैसा कोई भी सामान्य व्यक्ति कर सकता है, लेकिन एक गुलाब जो असीम खुशबू विखेर रहा है। ठीक समय पर उगने वाला सूर्य जो अपने प्रकाश से जीवन विखेर रहा है ये तो कोई और ही कर रहा है' साईस और फिलासॉफी का चिन्तन एक मूल भूत थ्यौरी पर आगे बढ़ता है।

वह मूल-भूत समय है कि कही भी कोई कार्य है तो उसका कारण जरूर है। इसलिए यह संसार जो बना है इसका भी कोई न कोई कारण अवश्यक हैं । अत: लोग अन्धविश्वास जब करते हैं तब वे किसी चीज का रहस्य नहीं जान पाते थे।कारणों की तलाश में नहीं उतरते, कारण की तलाश करते हैं तो उथले-2 ढंग से करते है गहराई में नहीं पहुँच पाते, और कारण का पता नहीं लगता और अंधविश्वास जन्म ले लेता हैं इसलिए महर्षि दयानन्द ने संसार में सबसे बड़ा कार्य किया कि लोगों के बंद दिमागों को खोलने की कोशिश की।

लेकिन सब पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा तो इसके भी कुछ कारण रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द के इस उपकार को विस्मृत नहीं किया जा सकता, परंतु दूसरे मत सम्प्रदाय ने लोगों के दिमागों पर ताला लगाने की कसम खाई है। क्योंकि वे प्रश्न उठाने की इजाजत नहीं देते, जो लिखा गया है। उस पर आँख बन्द करके विश्वास कर लो। डॉ० राधा कृष्णन कहा करते थे कि यदि धर्म में बुद्धि का प्रवेश वर्जित है तो यह केवल वेवकूफों की चीज हैं। यदि आप चाहते हैं कि सत्य का प्रचार और प्रसार हो तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के मार्ग को अपनाकर समाज का कल्याण करें।

महर्षि के बोध पर्व पर हम यह व्रत लेकर जाए कि हमें सत्य को विस्तार देना, सत्य को सुन्दर एवं ग्राह्य बनाकर हम सब सहयोग करे। थोड़ा-थोड़ा सहयोग देंगे तो वही विराट् रूप लेगा और इस विराट् शक्ति के सामने दुनियाँ का सभी अज्ञान, अन्धविश्वास धराशायी हो जाएगा।

छोटा हूँ तो क्या हुआ जैसे ऑसू एक।
सागर जैसा स्वाद है तू चखकर तो देख।।

रैली जी ने कहा कि चारों ओर धार्मिक भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। जिनको धर्म के अर्थ का ज्ञान तक नहीं वे लोग अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे है। हमें नकारात्मक रवैया नहीं अपनाना अपितु सकारात्मक पहलू के लिए हमें सत्य और असत्य का परिगणन करना आवश्यक है। श्री रैली जी ने कांवड़ आदि अनेक अन्धविश्वासों की भर्त्सना करते हुए। आर्यसमाज की सकारात्मक पहलू की चर्चा की। उन्होंने कहा कि पाखण्ड-खण्डिनी पताका आर्य समाज से लगाएँ, प्रत्येक आर्यसमाज चर्चा में एक बार पाखण्ड खण्डन कार्यक्रम का आयोजन करें, टी०वी० व मीडिया के माध्यम से दुष्प्रचार का विरोध करें, आस-पड़ोस के गणमान्यों से आर्य समाज की चर्चा करें, न्याय पालिका पर नजर रखते हुए जनहित याचिकाओं द्वारा दबाव बनाए।

दिल्ली संस्कृत शिक्षक संघ के सचिव श्री डॉ० विश्वम्भर दयालु जी ने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि- संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है? संसार की उदात्त विचारधारा हमारे संस्कृत ग्रन्थों में उल्लिखित है। उन्होंने केन्द्रीय विद्यालयों में त्रिभाषा सूत्र में 1968 की शिक्षा नीति के आधार पर संस्कृत भाषा को पुन: अध्यापन के रूप में शिक्षक संघ के महत्वपूर्ण कार्यो का वर्णन करते हुए उन्होंने संस्कृत के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान के लिए हम सबको मिलकर कार्य करना होगा क्योंकि संस्कृत ही हमारी पहचान है। इस अवसर पर आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को पुरस्कार वितरित किए गए जिनमें श्रीमती उमा मोंगा डॉ0 मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती महिला पुरस्कार दिया गया।

....शेष पेज 7 पर

191वें महर्षि ...

प्यार' आदि भजन कर्णप्रिय एवं मनो. रंजक थे। श्री धर्मपाल आर्य जी ने महर्षि दयानन्द के मार्ग का पूर्ण रूप से अनुसरण करने का अह्वान किया और वेद तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से सेवा एवं सहयोग करने का सन्देश दिया। आचार्य इन्द्र देव जी ने महर्षि के विचारों को प्रकट करते हुए कहा कि महर्षि ने लिखा है कि - ''आर्य समाज की उन्नति के लिए मुझ जैसे अनेक उपदेशक होने चाहिए। और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि सर्वत्र आर्य समाज कायम होकर दुराचार दूर हो जाए, वेद का सच्चा अर्थ लोगों के समझ में आए और उसी के अनुसार मनुष्य का आचरण हो तो सर्वत्र सुख का वातावरण बन जाए'' इसलिए हमें ऋषि प्रणीत सत्यार्थ प्रक. ाश को अवश्य पढ़ना चाहिए। श्री विनय आर्य जी ने महर्षि के जीवन दर्शन पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी जी आज भी अपने कार्यो एवं ग्रन्थों के माध्यम से हमारे बीच में विद्यमान है वे जीवित है। और आज हमें उनकी शिक्षाओं को अपनाना चाहिए। इसलिए अपने घर पर बालकों के जन्मदिवस या अन्य उपलक्ष्य पर अपने नजदीकि आर्य समाज से पुरोहित को बुलाकर यज्ञ कराना चाहिए। उसके लिए आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा भी प्राप्त कर सकते है। जिससे आप के गृह में प्रत्येक शुभ अवसर पर यज्ञादि के श्रेष्ठकार्य होते रहे, महर्षि के मिशन को गति प्रदान हो । इस अवसर पर गत वर्षो की भांति दिल्ली सभा के द्वारा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने वाले महानुभावों को सम्मानित किया गया जिसमें सर्वश्री भारत भूषण पुरंग एवं बी०डी० उक्खल सम्पादक मण्डल 'ब्रह्मार्पण' पत्रिका, श्री अजय आर्य गोविन्द राम हासानन्द संपादक 'वेद प्रकाश पत्रिका', श्री अरुण आर्य सम्पादक कमल जयोति प्रकाशन आदि आर्य महानुभावों को शॉल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया आदि महानुभावों ने अपने पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से दूर-दराज एवं देश विदेश तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों वेद एवं आर्य समाज की मान्यताओं का प्रचार-प्रसार किया, जिससे आर्य समाज की एक छवि निखर कर हमारे समक्ष आई है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि ठाकुर श्री विक्रम सिंह एवं एम० एल० ए० श्री राम शरण गोयल जी का भी स्वागत एवं सम्मान आर्य समाज के पदाधिकारियों के द्वारा किया गया । आर्य समाज मंगोल पुरी के समस्त पदाधिकारी गण का सम्मान किया गया, यह आर्य समाज अपनी एक विशेषता बनाएँ हुए है। दिल्ली की समस्त आर्य समाजों में क्षेत्र फल की दृष्टि से सबसे छोटा मात्र 25 गज में बना हुआ, परन्तु सह आर्य समाज दिल्ली के 300 बालकों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करने के साथ उन्हें संस्कारिक भी कर रहा है। जो समाज कलयाण का सर्वोत्तम कार्य है। आर्यसमाज कीर्ति नगर के प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य एवं मन्त्री श्री सतीश चड्ढा जी सहित अन्य पदाधिकारियों का सम्मान व अभिनन्दन किया गया महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के कार्यक्रम को विस्तृत रूप देने के लिए पूर्ण रूप से सहयोग समर्थन एवं पुरुषार्थ किया है। कार्यक्रम के अन्त में आर्य वीर दल कीर्ति नगर की ओर से मधुर भजन प्रस्तुत किए गए अन्त में शान्ति पाठ के साथ समारोह का समापन हुआ।

विश्व पुस्तक मेला ...

अंग्रेजी का स्टाल श्री रमेशचंद्र आर्य, शिव कुमार मदान, श्री अशोक कुमार गुप्ता, श्री नरेंद्र सिंह हुड्डा तथा उनके सहयोगियों ने संभाला। यह सूची बहुत लम्बी है इसलिए कुछ ही नाम यहाँ दिए हैं। जिनके नाम का वर्णन नहीं है कृपया क्षमा करें। सभी सहयोगियों के ह्रदय जोश एवं प्रसन्नता से भरे थे और सब को ऋषि कार्य करने की संतुष्टि थी। आर्य संगठन के निर्माण में आपसी तालमेल कर विशेष कार्य को संपन्न करने का सौभाग्य आजकल कम ही देखने को मिलता है।

6. प्रगति रिपोर्ट– पिछले वर्ष की तुलना में 6 के स्थान पर 7 स्टाल हिंदी के लिए आरक्षित करवाये गए थे एवं 1 स्टाल अंग्रेजी पुस्तकों के हाल में आरक्षित था। जिनमें 500 के करीब पुस्तकों को पाठकों हेतु रखा गया था। इस वर्ष 8 लाख से अधिक (पिछले वर्ष 6 लाख) का वैदिक साहित्य, 20 सेट हिंदी एवं इंग्लिश वेद भाष्य तथा 55 सैट डीवीडी के, 1800 प्रतियाँ स्वामी श्रद्धानन्द कृत हिन्दू संगठन पुस्तक(जिसे केवल 10 रुपये मूल्य पर स्वामी जी के आवाहन शुद्धि एवं संगठन को प्रचलित करने के लिए वितरित किया गया था), 10,000 प्रतियाँ सत्यार्थ प्रकाश केवल 10 रुपये मूल्य पर (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं विभिन्न आर्यसमाजों द्वारा आर्थिक सहयोग से) वितरित की गई। साहित्य का वृहद स्तर पर ऐसा प्रचार आर्यसमाज द्वारा संभवत किसी अन्य स्थान पर शायद ही देखने को मिलता है।

7. इंटरनेट का योगदान– इस वर्ष इंटरनेट पर फेसबुक, व्हाट्सप्प आदि द्वारा पुस्तक मेले में आर्यसमाज के स्टाल का व्यापक प्रचार किया गया जिसके फलस्वरूप दूर दूर से पाठक केवल आर्यसमाज के स्टाल को देखने हेतु पुस्तक मेले में आये। युवाओं में वैदिक साहित्य हेतु रूचि देखने योग्य थी। आज के युग में इंटरनेट प्रचार प्रसार में सबसे प्रभावशाली माध्यम के रूप में स्थापित हुआ है। ऐसे में इंटरनेट की सहायता से वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार भविष्य की योजनाओं को निर्धारित करने में सहायक होगा। अगले वर्ष की रणनीति में इंटरनेट के माध्यम से पुस्तक मेले का प्रचार करना प्रमुख कार्यों में शामिल होगा।

8. समाचार पत्र का योगदान– स्वामी दयानंद के जन्म दिवस 14 फरवरी को दैनिक जागरण समाच. ार पत्र में स्वामी दयानंद के जन्म दिवस का आकर्षक विज्ञापन एवं पुस्तक मेले में आर्यसमाज के स्टाल पर पधारने का निमंत्रण दिया गया था जिसे पढ़कर अनेक इच्छुक लोग वेद आदि साहित्य के क्रय हेतु पधारें।

9. शंका समाधान– इस वर्ष पुस्तक मेले में वैदिक विद्वानों आचार्य संदीप जी दर्शनाचार्य, आचार्य ऋषिदेव जी दर्शनचार्य एवं वैदिक विद्वान श्री संजय जी द्वारा युवाओं का प्रभावशाली रूप से शंका समाधान कर वैदिक धर्म का परिचय दिया गया। शंका समाधान करने हमारे मुस्लिम भाई विशेष रूप से पधारे।

10. आगामी कार्यक्रम – पिछले 2 वर्षों से दिल्ली सभा देश के अनेक भागों में पुस्तक मेले में भाग ले चुकी है। इस वर्ष आगामी कार्यक्रम आगरा में 24 मार्च से 2 अप्रैल तक पुस्तक मेले एवं 22 से 30 मई तक काठमांडू में 19 वें नेपाल पुस्तक मेले में भाग लेने का विचार है। काठमांडू में सबसे बड़ी उपलब्धि ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी के अथक प्रयासों से नेपाली भाषा में महर्षि दयानंद कृत यजुर्वेद भाष्य का विमोचन होगा। ईश्वर से एक ही प्रार्थना है कि हमें और अधिक पुरुषार्थ करने का सामर्थ्य एवं बल प्रदान करे।

डॉ विवेक आर्य

होलिका दहन....

जनकपुत्री सीता को गाजर, मूली की तरह धरती से उत्पन्न बताकर इतिहास की हत्या कर दी गई। इसी प्रकार हनुमान की माता अंजना व पिता पवन बिना पूँछ के थे पर वीर हनुमान की सर्वत्र पूछ को पूँछ बताकर 'बन्दर' बना दिया जो पृथ्वी से 13 लाख गुणा बड़ा सूर्य मुख में निगल गया। इसी प्रकार चार वेद छः शास्त्रों के ज्ञाता होने के कारण महाबली रावण को 'दशानन' की उपाधि से सुशोभित किया गया था। लेकिन यहाँ भी धूर्तों ने दशानन का अर्थ दशमुख वाला कर दिया। इसी प्रकार होली शब्द का प्रयोग 'होलक' शब्द को बिगाड़ कर किया गया है। इसके साथ-साथ 'होलिका' हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष का अंतिम पर्व है तो इसका हिंदू संवत् में वर्ष का अंतिम पर्व होना और इसे समाज में परंपरानुसार होली कहना इसके एक अन्य गूढ़ अर्थ और कारण की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करता है।

इस पर्व पर जो यज्ञ किया जाता था उसमें हमारे पूर्वज लोग, विशेषतः हमारे ऋषिगण हमसे अपने पूरे वर्ष के गलत कार्यों का प्रायश्चित भी कराया करते थे। जिसके अनुसार उन गलत कार्यों की नववर्ष में पुनरावृत्ति न हो इस भाव से यज्ञ में आहुति दी जाती थी। गलती अब तक जो होनी थी सो हो ली अब भविष्य में ऐसा नहीं होगा, यह भावना गुप्त रूप से कार्य करती थी। इसलिए भी इस पर्व को होली कहा जाने लगा। लोकाचार में प्रचलित भी है कि जो 'होली सो होली' अर्थात जो कुछ भी वर्ष भर में आपस में मनमुटाव अथवा वैरभाव था। उसे दिल से निकालकर परस्पर प्रेम की भावना जागृत करें। सदाचार, समरसता आदि मानवीय भाव हमारे जीवन का आभूषण हो जिस प्रकार पेड़-पौधों की नवीन कोमल पत्तियाँ अपने साथ-ही-साथ फल की प्रतीक बौर को लाकर उन्हें सभी प्राणियों के लिए उपयोगी एवं फलदायी बना डालती है उसी प्रकार हमारा जीवन भी पूरे समाज के लिए उपयोगी व फलदायी हो। प्रकृति का कैसा नियम है कि पुराने पत्तों को छोड़कर पतझड के पश्चात पेड़-पौधों पर जब नवीन पत्तियाँ आती है तो अपने साथ फल की बौर भी लाती है।

मानो ये कह रहीं हो कि पुरानी बात समाप्त हुई अब नया संदेश रचेंगे। ''छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी, नए दौर में लिखेंगे, मिलकर नई कहानी''। मानव भी इसी भावना से अपनी जीवन शैली का विकास करे, तो यह वसुन्धरा स्वर्ग समान हो जाए। यहीं संदेश हमारा पावन पर्व होली हमें देता हैं। इसलिए भी होलक शब्द हटाकर होली का प्रयोग किया गया एवं अधजले अन्न को 'होलक' कहते हैं इसी कारण इस पर्व का नाम होलिकोत्सव है। भारतीय ऋषि आविष्कृत वैदिक पर्व प्रणाली में होलिकोत्सव फाल्गुन मास में जिस समय आता है उस समय सारी प्रकृति में परिवर्तन की प्रतीति अनुभव होती है। पेड़-पौधे नई-नई पत्तियों से भली भांति लद गये होते आम आदि के पौधों पर बौर आ रहा होता है। फसल में हल्का पीलापन छा जाता है। खेतों की लहलहाती फसल को देखकर किसान का अंतर्मन भी लहलहाने लगता है। पशु-पक्षी तक अपना रंग बदलने लगते हैं। पुराने पंख छोड़कर उसी प्रकार नये रंग के पंखों में रंग जाते हैं, जिस प्रकार पेड़ पौधे पुराने पत्तों का परित्याग कर पुनः नये पत्तों को ग्रहण कर अपना

.....शेष पेज 4 पर

त्रिदिवसीय नि:शुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास मॉडल टाऊन पानीपत के तत्त्वावधान में 12 से 14 दिसंबर 2014 को पुण्डरी(कैथल) हरियाणा में क्रियात्मक निःशुल्क यज्ञ प्रशिक्षण शिविर पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर आर्य जी के ब्रह्मत्व एवं निर्देशन में सम्पन्न हुआ। जिसमें 146 यजमानों ने सपत्नीक यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में श्री नन्दकिशोर जी शास्त्री के सान्निध्य में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 18 ब्रह्मचारियों ने भाग लिया लगभग 70–80 शिविरार्थियों ने उपस्थित रह कर शिविर में यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर स्थान स्वामी ब्रह्मनन्द आश्रम वणी पुण्डरी (कैथल) में स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती के सहयोग व आशीर्वाद एवं श्री राजपाल बहादुर जी के संयोजन में सम्पन्न हुआ। **–कमल कान्त आर्य, संयोजक**

यह सूचना जनवरी के अंक में भी प्रकाशित की गई थी। खेद है कि उसमें आचार्य ज्ञानेश्वर के स्थान पर राजेश्वर छप गया था। अतः इसे पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। **–संपादक**

चुनाव समाचार

आर्य समाज न्यू मुल्तान नगर, दिल्ली–110056

प्रधान : श्री राजकुमार आर्य
मंत्री : श्री ज्ञानेंद्र प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री प्रेम बिन्द्रा आर्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा

प्रधान : श्री अर्जुनदेव महाजन
मन्त्री : श्री आर्य सत्यदेव महाजन
कोषाध्यक्ष : श्री विजय अग्रवाल

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय गुरुकुल

पथरगामा, गोड्डा (झारखण्ड) का **तीसरा वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण** महायज्ञ **12 से 15 मार्च 2015 तक कार्यक्रम होगा।**

यज्ञ ब्रह्मा एवं उपदेशक :– पं0 नवल किशोर शास्त्री जी, समस्तीपुर (बिहार)

भजनोपदेशक :– पं0 सत्य प्रकाश जी, दाना. पुर पटना, पं0 रंजन कुमार आर्य समस्तीपुर (बिहार),

वैदिक प्रवक्ता :– पं0 बालकेश्वर वैद्य जी शिक्षा विद् (राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत चतरा (झारखण्ड)

प्रातःकाल कार्यक्रम :– 8:00 से 12:00 बजे तथा सायंकाल कार्यक्रम :– 3:00 बजे से 8:00 बजे

श्री उमेश प्रसाद आर्य, सचिव
सम्पर्क सूत्र–9504153873

गुरूकुल यमुनातट मंझावली का 21वां वार्षिकोत्सव

फरीदाबाद हरियाणा में 21वें वार्षिक महोत्सव के अवसर पर सवा करोड़ गायत्री यज्ञानुष्ठान तथा चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ की पूर्णाहूति एवं समापन समारोह 7, 8, मार्च 2015 को होगा। इसकी अध्यक्षता श्री स्वामी चित्तेश्वरानंद सरस्वती, ब्रह्म आचार्य श्री विद्यादेव जी करेंगे। यज्ञ एवं वानप्रस्थ व संन्यास दीक्षा प्रातः 7 बजे से 9.30 बजे, (7 मार्च, 2015) विभिन्न प्रतियोगिताएं 10 बजे से 5 बजे तक, संस्कृत कवि सम्मेलन रात्रि 7 से 11 बजे। यज्ञ की पूर्णाहूति 8 मार्च 2015 को सुबह 9 बजे, गुरूकुल सम्मेलन 10.30 बजे। आप सब सादर आमंत्रित हैं।

संस्थापक, स्वामी प्रणवानंद सरस्वती
मो. 09868855155

गुरुकुल हरिपुर ओड़िशा का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर जुनानी (ओड़िशा) का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं वार्षिक महोत्सव आगन्तुक हजारों नर–नारियों की पावन उपस्थिति में 30,31 जनवरी व 1 फरवरी 2015 को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। श्री जयदेव आर्य राजकोट के शुभकरकमलों से ध्वजोत्तोलन महोत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरूकुल आमसेना, पूज्य स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (म॰प्र॰) आचार्य अंशुदेव प्रधान –छ॰ग॰ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग, श्री खुशहाल चन्द्र आर्य कोलकाता, आदि विद्वत्गण उपस्थित हुए। विभिन्न विद्यालयों से आये हुए छात्र–छात्राओं का क्रमशः चित्रांकन, भाषण, संगीत एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया, विजयी छात्रों को पारितोषिक व प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। गुरुकुल के पंचम वर्ष पूर्ति होने पर गुरुकुल से प्रकाशित पंचायत स्मारिका, मनुष्य जीवन का उद्देश्य, आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय, का विमोचन कार्यक्रम श्री केदार कश्यप शिक्षा मन्त्री छ॰ग॰ शासन एवं अनेक गणमान्य महानुभावों के शुभकरकमलों से सम्पन्न हुआ।

दिलीप कुमार जिज्ञासु आचार्य

शेष महर्षि दयानन्द सरस्वती.... (बोध दिवस)

वे योग, जुडो, यज्ञ, वेद एवं संस्कृति की शिक्षा के प्रचार–प्रसार में तन मन धन से संलग्न है जिसमें बच्चों को संध्या एवं हवन के मन्त्रों को कण्ठस्थ कराकर उन्हे श्रेष्ठसंस्कार दे रही है। श्री रविन्द्र मेहता जी माता रूकमणी देवी स्मृति पुरस्कार, आचार्य जयप्रकाश शास्त्री को सभाकार्यों में विशेष योगदान एवं श्री विवेक आर्य वट्सएप्प, फेशबुक, ट्वीटर के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में विशेष योग दान देने हेतु अभिन्नदन किया गया। श्री सत्यप्रकाश ब्र॰ दिल्ली सभा के द्वारा चलाई जा रही 'घर–घर यज्ञ योजना हर घर यज्ञ योजना' के अन्तर्गत घर–घर जाकर यज्ञ करते है और बालकों से वार्तालाप कर उपयोगी साहित्य भेंट कर आर्य समाज को गति देने हेतु शॉल ओढाकर सम्मानित किया गया। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती सांसद सीकर राजस्थान ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द ने ईश्वर की वाणी वेद के सही स्वरूप को संसार के सामने रखा, यही एक ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व एकरूपता एवं शांति को प्राप्त कर सकता है। सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण कर लुटेरों ने विजय प्राप्त की क्योंकि यहाँ के पण्डित पुजारियों और राजाओं में भी ऐसी धारणा बनी कि शिव उन्हें स्वयं दण्ड देंगे। जो लोग नारी शिक्षा का विरोध करते थे। आज उनकी अनेकों संस्थाएं सनातन धर्म के नाम से नारी को शिक्षा प्रदान कर रही हैं। आज उनकी बेटियाँ विभिन्न क्षेत्रों में भारत का नाम रोशन कर रही है।

यह महर्षि दयानन्द की ही देन है। आर्य समाज का एक सामान्य व्यक्ति अच्छी प्रकार से यज्ञ करा सकता है जो पौराणिक जगत् में अच्छे आचार्य विद्वान नहीं करा सकते। गुरुदत्त विद्यार्थी जो रात–दिन आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य कर रहे थे, एक बार स्वामी श्रद्धानन्द (एडवोकेट मुन्शीराम) जी ने कहा कि पं॰ जी आप की अभी 25 वर्ष की आयु है। आप केवल 2–3 घंटे सोते हो मैं कितने दिन से आप को देख रहा हूँ। आप का स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। आगे काम कैसे चलेगा, उन्होंने कहा– प्रधान जी एक तरफ तो आर्य बन्धुओं की जिज्ञासा उनके प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है। दूसरे दिन में मैं सो नहीं सकता क्योंकि वेद की आज्ञा हैं। '' दिवा मा स्वाप्सि' दिन में नहीं सोना चाहिए।

इसलिए दिन में मैं नहीं सोता क्योंकि वेद की आज्ञा का उल्लंघन होता है, दूसरे समय देने से इन्कार नहीं करता क्योंकि आर्यों की भावना को ठेस पहुँचेगी, और 4 बजे प्रातः इसलिए उठता हूँ कि ईश्वर भक्ति के आनन्द से दिन की मलीनता दूर हो जाती है। क्या मैं वेद की आज्ञा को ठुकरा दूँ, क्या मैं ईश्वर भक्ति के आनन्द को ठुकरा दूँ, क्या मैं आर्यों की श्रद्धा को ठुकरा दूँ,। ये जीवन रहे न रहे, ये कार्य तो ऐसे ही चलेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी शास्त्रार्थ के लिए महीनों तक आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया और जिस तरह वकालत हेतु ग्रन्थों का अध्ययन करते थे उसी तरह शास्त्रार्थ के लिए अध्ययन करके जाते थे और विजयी होकर आते थे। इसका कारण महर्षि, आर्य समाज एवं वेद के प्रति अगाध श्रद्धा और निष्ठा। स्वामी जी ने अपने राजनैतिक पृष्ठभूमि का उदाहरण देते हुए बताया कि एक बार हमारी संसद की मीटिंग थी। प्रधानमंत्री जी संसद में भाषण देकर आ रहे थे जैसे हि उनकी नजर मुझ पर पड़ी उन्होंने मुझे बुलाया और कहा स्वामी जी कैसे हो, मैने कहा ठीक हूँ। उन्होंने केन्द्रीय भवन की तरफ देखकर कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र के लिए भी कोई जगह चुन लो। इसलिए हमें निष्ठा एवं श्रद्धापूर्वक कार्य करना होगा। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी (महामंत्री दि॰ आ॰प्र॰सभा) ने स्वामी जी के निदेशानुसार कार्यक्रम की सुरक्षा में तन्मय सुरक्षा कर्मियों को सत्यार्थ प्रकाश की एक एक प्रति भेंट की। टी॰वी॰ के वरिष्ठ पत्रकार श्री सुधांशु रंजन जी ने अंधविश्वास निवारण के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। 31 मार्च 2015 को अपनी सेवा निवृत्ति के पश्चात श्री भारत भूषण जी ने सपत्नीक गुरुकुल देवघर की आजीवन सेवा करने का संकल्प लिया। अंत में शांति पाठ के साथ समारोह का समापन हुआ।

एमडीएच सभागार का उद्घाटन

आर्य समाज राजेन्द्र नगर द्वारा संचालित, आर्य महिला आश्रम राजेन्द्र नगर, के परिसर में पुनर्सज्जित, महाशय धर्मपाल एम॰डी॰एच॰ सभागार का उद्घाटन आर्य समाज के भामाशाह महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त,दानव. ीर, यज्ञ प्रेमी महाशय धर्मपाल जी ;चेयरमैन एम॰डी॰एच॰ की गरिमामयी उपस्थिति में। श्री राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी (निदेशक एम॰डी॰एच॰ लिमिटेड) के शुभ करकमलों द्वारा दिनांक 4 मार्च 2015 तद्नुसार फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी वि॰सं॰ 2071 को वैदिक मंत्रोच्चार के बीच सम्पन्न होगा।

श्रीमती आदर्श सहगल, प्रधाना

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 फरवरी से रविवार 1 मार्च, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26/27 फरवरी, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 25 फरवरी, 2015

प्रतिष्ठा में,

ऋषि जन्मोत्सव समारोह संपन्न

ऋषि दयानन्द जी का जन्मोत्सव दिनांक 14 फरवरी 2015 को आर्य समाज औचन्दी में हर्षोउल्लास पूर्व मनाया गया जिसमें ऋषि दयानन्द जी की जीवन चरित्र के कॉमिक्स ओ३म् चिन्ह तथा मानव उत्थान के स्वर्णिम सूत्र तथा पाँच निगम पार्षदों को मिठाई तथा एक कलैण्डर भेंट स्वरूप दिये गये। **मंत्री**

विशाल शोभा यात्रा

वेद प्रचार मण्डल उ.प. दिल्ली द्वारा समाज सुधारक, क्रांतिकारी, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर विशाल शोभा यात्रा रविवार, 1 मार्च 2015, यज्ञः प्रातः 10 बजे, यात्रा प्रारम्भ : 11 बजे, **मार्ग**–आर्य समाज सरस्वती विहार से रेलवे रोड होते हुए आर्य समाज सन्देश विहार पहुँचेगी। **जोगेन्द्र खट्टर, महामंत्री**

निःशुल्क चिकित्सीय परीक्षण शिविर– दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य अस्पताल औचन्दी में दिनांक 15 फरवरी 2015 को निःसंतान दम्पतियों का निःशुल्क परीक्षण शिविर लगाया गया जिसमें कई निःसन्तान दम्पतियों ने अपना परीक्षण कराया। **मंत्री**

आर्य समाज मोहल्ला गोबिनद् गढ़

जालन्धर का 73 वॉ वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न। वार्षिकोत्सव कार्यक्रम 16 फरवरी 2015 को यज्ञ के द्वारा प्रारंभ हुआ और 22 फरवरी को समापन हुआ।

पृष्ठ 6 का शेष – ## होलिका दहन....

श्रृंगार करके दुल्हन की भांति सजग खड़े हो जाते हैं। गाय आदि पशु भी अपने रोम डालते हैं। नये रोम आकर उन्हें भी नया श्रृंगार पहना डालते हैं। और तो और स्वयं मनुष्य की चमड़ी भी 'जाड़े की पिटी हुई' होकर अपना स्वरूप परिवर्तित कर डालती है। कहने का आशय है कि प्रकृति में चहुं और परिवर्तन की लहर दौड़ी सी अनुभव होती है। प्रकृति अपना रूप परिवर्तित कर पुनः सजधजकर नव वधू सी लगने लगती है। इसी समय किसान अपने खेत पर षाढी की फसल–गेहूँ, जौ, चना व मटर आदि की अधपकी फसल को भूनकर खाता हुआ बहुत ही मस्ती का अनुभव करता है। इस अधपके अन्न को भूनकर खाने को वह 'होला' कहता है। इस वैज्ञानिक सत्य को पौराणिक पंडित किसी कथानाक से नहीं जोड़ पाये। उन्हें वह होला ही क्यों कहता है? हो. लिका का भाई कहीं होलक अथवा होला तो नहीं था? नहीं, ऐसा नहीं है। अपितु संस्कृत में अधपके अन्न को होलक कहते हैं– तृणाग्निं भ्रष्टार्द्धपक्व शमीधान्यं होलकः। होला इति हिंदी भाषा। (शब्द कल्पद्रुम कोष) अर्थात् तिनकों की अग्नि में भूने हुए अधपके शमीधान्य फली वाले अन्न को 'होलक' कहते हैं जिसे हिंदी में होला कहते है। 'भाव प्रकाश' ग्रन्थ के अनुसार : – अर्द्धपक्वशमी धान्यै स्तृणा भ्रष्टैश्च होलकः होलकोऽल्पानिलो मेदकाल दोषश्रमा यहः भवेदभो होलको यस्य तत्तदगुणो भवेतः। अर्थात तिनकों की अग्नि में भुने हुए (अधपके) शमी–धान्य (फली वाले अन्न) को होलक कहते हैं यह होला स्वल्प वात है। यह मेद, कफ और थकान के दोषों को समन करता है, जिस–जिस अन्न का होला होता है उससे उसी–उसी अन्न का गुण होता है। वसंत ऋतु में नए अन्न से (येष्ट) यज्ञ करते हैं। इसीलिए इस पर्व का नाम वासंती नव सस्येष्टि है।

डा. गंगा शरण आर्य, मोहम्मदपुर नई दिल्ली। मो. न. 9871644195

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, **E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह